



भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण

EXTRAORDINARY

भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (ii)

PART II—Section 3—Sub-section (ii)

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 265]

नई दिल्ली, मंगलवार, मार्च 25, 2003/चैत्र 4, 1925

No. 265]

NEW DELHI, TUESDAY, MARCH 25, 2003/CHAITRA 4, 1925

भारतीय प्रतिभूति और विनियम बोर्ड

अधिसूचना

मुम्बई, 25 मार्च, 2003

प्रतिभूति संविदा (विनियमन) अधिनियम, 1956 की धारा 11 के अधीन अहमदाबाद स्टॉक एक्सचेंज के शासी बोर्ड को अतिष्ठित करते हुए आदेश

का.आ. 314(अ).—भारतीय प्रतिभूति और विनियम बोर्ड (इसमें इसके पश्चात् "भाप्रविबो" के रूप में निर्दिष्ट) द्वारा 05 अगस्त 2002 को किये गये अहमदाबाद स्टॉक एक्सचेंज (इसमें इसके पश्चात् "एएसई" के रूप में निर्दिष्ट) के वार्षिक निरीक्षण के दौरान, अन्य बातों के साथ, यह देखा गया कि एएसई के सदस्य स्टॉक एक्सचेंज परिसर में प्रतिभूतियों में अनधिकृत व्यापार कर रहे थे। तदुपरि, भाप्रविबो ने तारीख 26 अगस्त 2002 के पत्र द्वारा, एएसई को प्रतिभूतियों में अनधिकृत व्यापार को रोकने तथा अन्वेषण करने के लिए तुरंत कदम उठाने और एक्सचेंज के उन सदस्यों के खिलाफ आवश्यक कदम उठाने की सलाह दी जो उक्त व्यापार में अंतर्वलित थे। भाप्रविबो ने एएसई को उनके द्वारा की गई कार्रवाई संबंधी रिपोर्ट भी प्रस्तुत करने की सलाह दी। एएसई ने तारीख 30 अगस्त 2002 के पत्र द्वारा, सूचित किया कि वे मामले में जांच शुरू कर रहे हैं और वे मामले की रिपोर्ट प्रस्तुत कर देंगे। एएसई ने यह भी सूचित किया कि उन्होंने सदस्यों को अनधिकृत व्यापार से विरत रहने की चेतावनी देते हुए परिपत्र जारी किया है। तत्पश्चात्, 17 सितंबर 2002

को, एएसई ने भाप्रविबो को अनधिकृत व्यापार के संबंध में रिपोर्ट प्रस्तुत की। एएसई की उक्त रिपोर्ट तारीख 25.9.2002 के कारण बताओ नोटिस के उपाबंध के रूप में उपाबद्ध थी।

2.0 एएसई की तारीख 17 सितंबर 2002 की उक्त रिपोर्ट, में कथन था कि :

- क) स्टॉक एक्सचेंज, अहमदाबाद के अधिकृत परिसर के भीतर कोई अनधिकृत बाजार प्रचालनगत नहीं है और यह कि न तो व्यापारिक-समय के दौरान अथवा न ही व्यापारिक-सत्र के बंद होने के पश्चात् किसी ऐसे क्रियाकलाप हेतु सदस्यों/गैर-सदस्यों का कोई जमाव होता है।
- ख) कामधेनु कॉम्पलेक्स, पांजरापोल में एक खुले स्थल में, जहाँ स्टॉक एक्सचेंज अवस्थित है, व्यापारिक-सत्र के बंद होने के पश्चात् व्यक्तियों का जमाव नियमित रूप से होता है।
- ग) अनधिकृत व्यापारिक-सत्र के दौरान क्रियाकलापों का संप्रेक्षण करने के लिए प्रतिनियुक्त एक्सचेंज के पदधारी ने यह रिपोर्ट दी कि -
 - उनके एक्सचेंज के सदस्य अनधिकृत बाजार में भाग नहीं ले रहे थे
 - अन्य व्यक्ति जो एक्सचेंज से संबद्ध नहीं हैं उक्त बाजार में भाग लेते हैं
 - सत्र की अवधि प्रतिदिन लगभग एक घंटा है और सहभागियों के बीच निपटान की प्रक्रिया प्रत्यक्ष रूप से भुगतान करना एवं नकदी प्राप्ति करना है।
- घ) ऐसे अनधिकृत बाजार में व्यक्तियों द्वारा सहभागिता के कारण ऐसे बताये जाते थे -
 - उनकी इक्विटी एवं व्युत्पन्नी बाजार में कोई पहुंच नहीं है।
 - वे संव्यवहार की लागत, मार्जिन तथा जोखिम प्रबंधन से बचना चाहते हैं।
 - उन्हें एक दूसरे में विश्वास है और इसलिये उन्हें निपटान में कोई समस्या नहीं है।
 - वे स्टॉक दलाल अथवा उप-दलाल के रूप में भाप्रविबो के पास रजिस्ट्रीकृत नहीं हैं और इस प्रकार वे समस्त विनियामक अनुपालना से बचने में समर्थ हैं।
 - विकल्प संविदाएँ एएसई में उपलब्ध नहीं हैं जबकि ये व्यक्ति "फाटक" के नाम से पुकारी जानेवाली अद्वितीय प्रकार की विकल्प संविदा का प्रचालन करते रहे हैं।

- ड) अनधिकृत बाजार प्रतिभूतियों के क्रय या विक्रय हेतु नहीं किया जाता है और इसीलिये किसी भी समय एक्सचेंज की इक्विटी व्यापारिक प्रणाली में प्रतिबिंबित नहीं होता है। विकल्प संविदाओं का निपटान सुपुर्दगी के तौर पर नहीं किया जाता है, किंतु, उनका निपटान हमेशा कीमत अंतर के तौर पर नकद में किया जाता है। ये संविदाएँ शेयरों के नियमित क्रय तथा विक्रय के तदरूप या समरूप नहीं हैं और इसीलिये बाजार की सत्यनिष्ठा के प्रति कोई आशंका नहीं है।
- च) अनधिकृत बाजार की व्यापारिक कार्य-पद्धति स्थानीय भाषा में "फाटक" के रूप में पदबद्ध है जिसका अर्थ है व्युत्पन्नी संविदाएँ और "फाटक" जो तीन विभिन्न प्रकार के संव्यवहारों अर्थात् - जोता, भाव भाव तथा तेजी मंदी से युक्त है।

3.0 तत्पश्चात्, 19 सितंबर 2002 को, भाप्रविबो ने एएसई का आकस्मिक निरीक्षण किया। भाप्रविबो के निरीक्षण अधिकारी ने देखा कि अनधिकृत बाजार स्टॉक एक्सचेंज के परिसर के भीतर खुलकर चिल्लाने के अंदाज में हो रहा था और एक्सचेंज के सदस्य भी इसमें भाग ले रहे थे। जब निरीक्षण अधिकारी ने यह संप्रेक्षण देते हुए सामने से पूछा कि एक्सचेंज के सदस्यों द्वारा एक्सचेंज के परिसर में अनधिकृत व्यापार चल रहा था, तो एएसई के कार्यपालक निदेशक ने भाप्रविबो को उसी दिन यह पुष्टि करते हुए पत्र जारी किया कि जोता फाटक हेतु अनधिकृत बाजार चल रहा था जैसा कि उनके द्वारा उस दिन भी देखा गया।

3.1 तारीख 20 सितंबर 2002 की अपनी रिपोर्ट में (तारीख 25.9.2002 के कारण बताओ नोटिस के उपाबंध ख के रूप में उपाबद्ध) निरीक्षण अधिकारी ने यह उल्लेख किया है कि :

- क) एएसई ने, भाप्रविबो के तारीख 26 अगस्त 2002 के पत्र द्वारा दिये गये अनुदेशों के बावजूद भी, अनधिकृत बाजार को रोकने के लिए कोई कदम नहीं उठाये हैं।
- ख) एएसई ने भाप्रविबो को अपने तारीख 17 सितंबर 2002 के पत्र द्वारा मिथ्या रिपोर्ट प्रस्तुत की है कि -
- स्टॉक एक्सचेंज के अधिकृत परिसर के भीतर अनधिकृत बाजार नहीं चल रहा था
 - एएसई के सदस्य ऐसे अनधिकृत बाजार में भाग नहीं ले रहे हैं

- 4.0 तत्पश्चात्, तारीख 20 सितंबर 2002 के पत्र द्वारा, एएसई ने भाप्रविबो को सूचित किया कि उन्होंने गैर-कानूनी संव्यवहारों को प्रतिषिद्ध करने हेतु आवश्यक कदम उठाये जाने का अनुरोध करते हुए एलिस ब्रिज पुलिस थाने में शिकायत दर्ज कर दी है। तथापि, वे इस बात की पुष्टि करने में विफल रहे कि स्टॉक एक्सचेंज के परिसर में अनधिकृत व्यापार प्रतिषिद्ध थे।
- 5.0 अनधिकृत व्यापार को प्रतिषिद्ध करने की असफलता के अलावा, एक मामले में जहाँ भाप्रविबो ने अप्राधिकृत वायदा संव्यवहारों में लिप्तता हेतु 20 दलालों के खिलाफ जाँच कार्यवाहियाँ शुरू की थीं, एएसई ने यह मामला अनुशासनिक कार्रवाई समिति को निर्देशित कर दिया और प्रत्येक पर 1000.00 रुपये की शास्ति उदग्रहीत कर दी।
- 6.0 निरीक्षण अधिकारी की रिपोर्ट और स्टॉक एक्सचेंज के परिसर में अनधिकृत व्यापार को रोकने में एएसई की असफलता के मद्देनजर, एएसई के शासी बोर्ड को प्रतिभूति संविदा (विनियमन) अधिनियम, 1956 (इसमें इसके पश्चात् "प्रसंविअ" के रूप में निर्दिष्ट) की धारा 11 के अधीन 25 सितंबर 2002 को कारण बताओ नोटिस उन्हें यह कारण बताने के लिये जारी किया कि समुचित कार्रवाई जिसमें अधिक्रमण सम्मिलित है उनके खिलाफ क्यों नहीं की जानी चाहिये। उक्त कारण बताओ नोटिस के साथ एएसई की रिपोर्ट, 20.09.2002 को प्रस्तुत निरीक्षण अधिकारी की रिपोर्ट, भाप्रविबो के तारीख 24 अप्रैल 2002 तथा 05 जुलाई 2002 के चेतावनी पत्र (25.9.2002 के कारण बताओ नोटिस के उपाबंध ग तथा उपाबंध घ के रूप में उपाबद्ध) भी एएसई के शासी बोर्ड को भेजे गये थे।
- 7.0 एएसई के शासी बोर्ड ने तारीख 9 अक्टूबर 2002 के अपने पत्र द्वारा उक्त कारण बताओ नोटिस के प्रति अपना उत्तर प्रस्तुत किया। उत्तर में, उन्होंने अन्य बातों के साथ कथन किया कि :
- i) एक्सचेंज के आसपास किन्हीं अनधिकृत संव्यवहारों को रोकने के लिए, एएसई ने पुलिस में शिकायत दर्ज की है और पुलिस प्राधिकारियों से अनुरोध किया है कि वे अनधिकृत संव्यवहारों से संबंधित ऐसे गैर-कानूनी क्रियाकलापों को प्रतिषिद्ध करने के लिए विधि के अधीन समुचित कार्रवाई करें।
 - ii) एक्सचेंज ने एक्सचेंज के परिसर के भीतर किन्हीं अनधिकृत संव्यवहारों को रोकने के लिए सम्यक पूर्वोपाय किये हैं।

- iii) सदस्यों के आचरण तथा उनके वित्तीय संव्यवहारों पर निष्पक्ष जाँच पड़ताल करने के लिए, शासी बोर्ड ने 26.7.2002 को आयोजित अपनी बैठक में मैसर्स सी.आर. शेरदलाल एंड कं. जो स्वतंत्र लेखापरीक्षक हैं द्वारा सदस्यों के लेखों का निरीक्षण करने का विनिश्चय किया।
- iv) उनके पास स्टॉक एक्सचेंज के अधिकृत परिसर के भीतर अनधिकृत बाजार में उनके एक्सचेंज के दलालों की सहभागिता का कोई ठोस सबूत नहीं है।
- v) 20 दलालों जिनके खिलाफ भाप्रविबो द्वारा जाँच शुरू कर दी गयी है पर शास्ति अधिरोपित करने का विनिश्चय अनुशासनिक कार्यवाई समिति द्वारा लिया गया था। हालाँकि, शासी बोर्ड भविष्य में अधिक सतर्क रहेगा।
- vi) एएसई ने व्युत्पन्नियों में व्यापार करने की अनुमति अभिप्राप्त नहीं की है और इसीलिये व्युत्पन्नियों में व्यापार आरंभ नहीं किया है। वे न तो सदस्यों को अथवा न ही गैर-सदस्यों को व्युत्पन्नियों में व्यापार करने की सुविधा का प्रस्ताव करते हैं। इसके अतिरिक्त, एएसई यह सुनिश्चित करता है कि परिसर के बाहर किये गये कोई भी फ्लोर संव्यवहार, प्रणाली द्वारा बनायी रखी गई कीमत-समय प्राथमिकता की वजह से, एएसई की व्यापारिक प्रणाली में नहीं डाले जा सकते।

7.1 उपर्युक्त के मद्देनज़र, एएसई ने यह निवेदन किया है कि उन्होंने प्रतिभूतियों में अनधिकृत व्यापार को रोकने के लिए पर्याप्त पूर्वोपाय किये हैं जिसके फलस्वरूप ऐसा व्यापार व्यावहारिक तौर पर बंद हो गया है, कि व्युत्पन्नियों में व्यापार एएसई में नहीं किया जाता है और इसीलिये, प्रसंविअ का कोई अतिक्रमण नहीं हुआ है, कि प्रतिभूतियों में होनेवाले कोई अवाँछनीय संव्यवहार एएसई के शासी बोर्ड की जानकारी में नहीं लाये जाते और इसलिये उन्होंने यह निवेदन किया है कि उन्होंने कभी भी किसी ऐसे संव्यवहार की अनुमति नहीं दी है।

8.0 एएसई के शासी बोर्ड ने इस संबंध में मेरे समक्ष वैयक्तिक सुनवाई के अवसर की भी माँग की है। वैयक्तिक सुनवाई का अवसर शासी बोर्ड के सदस्यों को 20 नवंबर 2002 को प्रदान किया गया था। उन्होंने अपने तारीख 9.10.2002 के उत्तर में निवेदन किया कि उन्होंने पुलिस में शिकायत दर्ज कर दी है और वे प्रतिभूतियों में अनधिकृत व्यापार को प्रतिषिद्ध करने के लिए समस्त आवश्यक कार्यवाई कर रहे हैं। शासी बोर्ड द्वारा उनके उत्तर में किये गये निवेदन कि अनधिकृत व्यापार रोक दिया गया था के मद्देनज़र, भाप्रविबो द्वारा 15 नवंबर 2002 को, उक्त निवेदन की सत्यवादिता की पुष्टि करने के लिए, निरीक्षण दल प्रतिनियुक्त किया गया। निरीक्षण दल ने निरीक्षण के दौरान 15.11.2002 को यह पाया कि व्यापार की खुलकर चिल्लाने की पद्धति एएसई के परिसर में निचली मंज़िल में तथा एचडीएफसी

बैंक के नज़दीक सदस्यों द्वारा चलायी जा रही थी। उक्त निरीक्षण दल के सदस्य 20.11.2002 को मेरे समक्ष वैयक्तिक सुनवाई के दौरान उपस्थित थे ताकि यदि शासी बोर्ड के सदस्य उक्त निरीक्षण दल के सदस्यों से कोई प्रश्न पूछना चाहते तो पूछ सकते थे। निरीक्षण दल ने मेरे और शासी बोर्ड के सदस्यों के समक्ष बताया कि उक्त निरीक्षण के दौरान 15.11.2002 को, उन्होंने यह देखा था कि अनधिकृत व्यापार एएसई के परिसर में चल रहा था यहाँ तक कि व्यापारिक-समय के दौरान भी। शासी बोर्ड की ओर से यह निवेदन किया गया कि अभिकथित संव्यवहार स्टॉक एक्सचेंज के बाहर हुए थे और उनके लिए इसका अनुश्रवण करना संभव नहीं था।

9.0 मैं यह निष्कर्ष निकालता हूँ कि एएसई के परिसर में अनधिकृत व्यापार भाप्रविबो द्वारा किये गये निरीक्षणों के दौरान 5.8.02 तथा 19.9.02 को पाया गया इसकी पुष्टि स्टॉक एक्सचेंज के कार्यपालक निदेशक द्वारा भी उनके तारीख 19.9.02 के पत्र द्वारा की गयी थी। इसे एएसई के पदधारियों के ध्यान में लाया गया था और उन्हें इसे प्रतिषिद्ध करने के लिए कदम उठाने की सलाह दी गयी थी। एएसई के पदधारियों ने अनधिकृत व्यापार को रोकने के लिए कदम उठाने का वचन दिया था और अपने तारीख 9.10.2002 के उत्तर में, शासी बोर्ड ने कथन किया था कि एक्सचेंज ने एक्सचेंज के परिसर के भीतर किन्हीं अनधिकृत संव्यवहारों को रोकने के लिए सम्यक पूर्वोपाय किये हैं। उन्होंने यह भी कथन किया है कि उनके पास अनधिकृत बाज़ार में उनके सदस्यों की सहभागिता के कोई ठोस सबूत नहीं हैं और कि एक्सचेंज ने किन्हीं ऐसी पद्धतियों को रोकने एवं इन पर प्रतिबंध लगाने के लिए कड़ी प्रणाली लागू की है और कि उक्त अनधिकृत व्यापार व्यावहारिक तौर पर बंद हो गया है। हालाँकि, भाप्रविबो द्वारा प्रतिनियुक्त निरीक्षण दल ने 15.11.2002 को एक्सचेंज के परिसर में अपने निरीक्षण के दौरान यह पाया कि परिसर में अनधिकृत व्यापार खुलकर चिल्लाने के अंदाज में चल रहा था और कि एक्सचेंज के सदस्य इसमें अंतर्वलित थे।

10.0 इस संबंध में, यह उचित होगा कि विधि के सुसंगत उपबंधों का हवाला दिया जाये। प्रसंविअ की धारा 16 यह उपबंध करती है कि :

"16(1) यदि केन्द्रीय सरकार की यह राय है कि किसी राज्य या क्षेत्र में विनिर्दिष्ट प्रतिभूतियों में अवांछनीय सट्टा रोकना आवश्यक है तो यह, राजपत्र में अधिसूचना द्वारा, यह घोषित कर सकती है कि कोई व्यक्ति, अधिसूचना में विनिर्दिष्ट राज्य या क्षेत्र में, केन्द्रीय सरकार की अनुज्ञा के बिना, अधिसूचना में विनिर्दिष्ट किसी प्रतिभूति के क्रय या विक्रय के लिए कोई संविदा, सिवाय ऐसे विस्तार और रीति के, यदि कोई हो, जो अधिसूचना में विनिर्दिष्ट की जाए, नहीं करेगा।

(2) उपधारा (1) के अधीन जारी की गई अधिसूचना की तारीख के पश्चात् उसके उपबंधों के उल्लंघन में की गई सभी संविदाएं अवैध होंगी । "

उपर्युक्त के अनुसार, अधिसूचना सं. का.आ. 184(अ) 01 मार्च 2000 को भारत के राजपत्र में यह कथन करते हुए प्रकाशित हुई थी कि

"भारतीय प्रतिभूति और विनियम बोर्ड (इसमें इसके पश्चात् "बोर्ड" के रूप में निर्दिष्ट), प्रतिभूति संविदा (विनियमन) अधिनियम, 1956 की धारा 16 की उप-धारा (1), उक्त अधिनियम की धारा 29क के अधीन जारी भारत सरकार की अधिसूचना सं. 573 (अ) तारीख 30 जुलाई 1992 और अधिसूचना सं. 183(अ) तारीख 1 मार्च, 2000 के साथ पठित, द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए यह राय हो जाने पर कि संपूर्ण भारत में प्रतिभूतियों में अवांछनीय सट्टेबाजी को रोकने के लिए यह आवश्यक है, एतद्वारा घोषणा करता है कि राज्यक्षेत्र जिस तक उक्त अधिनियम का विस्तार होता है में कोई व्यक्ति, बोर्ड की अनुज्ञा के बिना, ऐसी हाजिर सौदा संविदा या नकदी अथवा दस्ती परिदान अथवा विशेष परिदान के लिए संविदा या व्युत्पन्नियों में संविदा जैसी उक्त अधिनियम या भारतीय प्रतिभूति और विनियम बोर्ड अधिनियम, 1992 और ऐसे अधिनियमों के अधीन बनाये गए नियमों तथा विनियमों और मान्यताप्राप्त स्टॉक एक्सचेंज के नियमों, विनियमों तथा उप-विधियों के अधीन अनुज्ञेय है से भिन्न प्रतिभूतियों के विक्रय या क्रय के लिए कोई संविदा नहीं करेगा ।

परंतु यह कि सरकारी प्रतिभूतियों, स्वर्ण संबंधित प्रतिभूतियों, मुद्रा बाजार प्रतिभूतियों और ऋण प्रतिभूतियों में तुरंत अग्रिम संविदाओं, मान्यताप्राप्त स्टॉक एक्सचेंज में की गयी, के विक्रय या क्रय के लिए कोई संविदाएँ, -

- क) प्रतिभूति संविदा (विनियमन) अधिनियम, 1956 (1956 का 42), या भारतीय प्रतिभूति और विनियम बोर्ड अधिनियम, 1992 (1992 का 15) के अधीन बनाये गए नियमों या विनियमों या उप-विधियों या उक्त अधिनियमों के अधीन भारतीय प्रतिभूति और विनियम बोर्ड द्वारा जारी निदेशों ;
- ख) भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा भारतीय रिजर्व बैंक अधिनियम, 1934 (1934 का 2) या बैंककारी विनियमन अधिनियम, 1949 (1949 का 10) या विदेशी मुद्रा विनियमन अधिनियम, 1973 (1973 का 46) के अधीन बनाये गए नियमों या जारी मार्गदर्शक सिद्धांतों या निदेशों ;

ग) प्रतिभूति संविदा (विनियमन) अधिनियम, 1956 (1956 का 42) के अधीन भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा जारी अधिसूचनाओं में अंतर्विष्ट उपबंधों

के अनुसार की जायेंगी । "

10.1 मैं यह भी निष्कर्ष निकालता हूँ कि एएसई ने अपने तारीख 17 सितंबर 2002 के पत्र में यह स्वीकार किया है कि स्टॉक एक्सचेंज के परिसर में व्युत्पन्नियों में भी अनधिकृत बाजार चल रहा था । तारीख 20.9.2002 को एलिस ब्रिज पुलिस थाने में दर्ज शिकायत में, स्टॉक एक्सचेंज ने यह उल्लेख किया है कि कुछ असंदिग्ध व्यक्ति स्टॉक एक्सचेंज के परिसर के भीतर प्रतिभूतियों में गैर-कानूनी संव्यवहार कर रहे हैं और कि यह प्रसंविअ के अधीन संज्ञेय अपराध है । इस संबंध में, प्रसंविअ की धारा 18क यह कथन करती है कि तत्समय प्रवृत्त किसी अन्य विधि में अंतर्विष्ट किसी बात के होते हुए भी, व्युत्पन्नियों में संविदाएँ वैध तथा विधिमान्य होंगी यदि ऐसी संविदाओं : (क) का व्यापार मान्यताप्राप्त स्टॉक एक्सचेंज में ; (ख) का निपटान मान्यताप्राप्त स्टॉक एक्सचेंज के समाशोधन गृह (क्लीयरिंग हाउस) में ऐसे स्टॉक एक्सचेंज के नियमों एवं उप-विधियों के अनुसार किया जाता है ।

10.2 मैं यह निष्कर्ष निकालता हूँ कि अनधिकृत बाजार परिसर जहाँ एएसई अवस्थित है में प्रसंविअ की धारा 16 तथा 18क के उपबंधों का उल्लंघन करते हुए चल रहा था । मैं यह निष्कर्ष निकालता हूँ कि यद्यपि तारीख 9.10.2002 के उनके उत्तर में, एएसई ने यह निवेदन किया है कि उन्होंने किसी गैर-कानूनी व्यापार को रोकने के लिए समस्त आवश्यक कदम उठाये हैं, 15.11.2002 को भाप्रविबो के पदधारियों द्वारा किये गये निरीक्षण के दौरान यह देखा गया कि गैर-कानूनी व्यापार अभी भी चल रहा था । इसे प्रतिषिद्ध करने हेतु भाप्रविबो से प्राप्त निदेशों के बावजूद भी अनधिकृत व्यापार को चलते रहने की अनुमति देते हुए, एएसई प्रसंविअ के उक्त उपबंधों की अनुपालना को सुनिश्चित करने में विफल रहा है । यह निवेदन कि एएसई के लिए ऐसे संव्यवहारों का अनुश्रवण करना संभव नहीं है क्योंकि यह स्टॉक एक्सचेंज के बाहर हुआ है - मान्य नहीं है । पूर्ववर्ती पैरों में निष्कर्ष, विशिष्टतया पैरा 9.0 यह दर्शाता है कि ऐसा अनधिकृत संव्यवहार एक्सचेंज के परिसर के भीतर हो रहा था और कुछ सदस्य इसमें अंतर्वलित भी थे । नोटिसी के प्रतिवाद के अनुसार यदि यह मान भी लिया जाये कि ऐसे संव्यवहार स्टॉक एक्सचेंज के बाहर हुए थे, तो प्रसंविअ की धारा 16, 18क, 19 के कथनों और धारा 16 के अधीन जारी अधिसूचना के मद्देनजर, ऐसे संव्यवहारों को रोकना एक्सचेंज का कर्तव्य है ।

- 11.0 मैं यह निष्कर्ष निकालता हूँ कि एक्सचेंज ने नियत समय-सीमा के भीतर भाप्रविबो के निदेशों / परिपत्रों आदि का अनुपालन नहीं किया है और इसके निदेशों का अनुपालन करने में भाप्रविबो द्वारा नियत समय-सीमाओं की अवहेलना की है। इस संबंध में, मैं यह भी नोट करता हूँ कि भाप्रविबो ने चालू वित्तीय वर्ष में, नकदी बाजार में सकल मार्जिन आधारित प्रणाली का कार्यान्वयन न करने और व्यापार को विच्छिन्न करने हेतु, तारीख 24 अप्रैल 2002 एवं 05 जुलाई 2002 के दो चेतावनी पत्र जारी किये हैं।
- 12.0 मैं यह निष्कर्ष निकालता हूँ कि एएसई प्रसंविअ की धारा 8 के अधीन भाप्रविबो द्वारा जारी तारीख 10 जनवरी 2002 के आदेश का अनुपालन करने में असफल रहा जिसमें एक्सचेंज को निदेश दिया गया था कि वे दो मास की कालावधि के भीतर स्टॉक एक्सचेंज के प्रबंधन से स्वामित्व तथा व्यापारिक सदस्यता के पृथक्करण को प्रभावी करने के लिए अपने नियमों, अनुच्छेदों आदि को संशोधित करें। तदुपरि भाप्रविबो को इसे प्रभावी करने के लिए मजबूरन तारीख 16 अप्रैल 2002 की अधिसूचना द्वारा एएसई के नियमों को संशोधित करना पड़ा।
- 13.0 यह देखा जा सकता है कि संयुक्त संसदीय समिति ने अपनी रिपोर्ट में जो 19.12.2002 को संसद के समक्ष रखी गई थी, भी यह संप्रेक्षण दिया है कि विभिन्न प्ररूपों में गैर-कानूनी वित्तपोषण अहमदाबाद जैसे एक्सचेंजों में फिर से हुआ प्रतीत होता है। बदला प्रभारों को निर्धारित करने के लिए एक्सचेंज के व्यापारिक हॉल / एक्सचेंज के बरामदों में सप्ताह में किसी विशिष्ट दिन को नियत समय पर साथ-साथ सौदे करना और दलालों का इकट्ठा होना एक आम बात है। आवश्यकता है कि भाप्रविबो तुरंत कार्रवाई करे।
- 14.0 मैं यह निष्कर्ष निकालता हूँ कि पुलिस प्राधिकारियों के समक्ष एफ.आई.आर दाखिल किये जाने की बाबत और अनधिकृत संव्यवहारों में अंतर्विलित पाये गये एक्सचेंज के सदस्यों के खिलाफ अनुशासनिक कार्रवाई करने में शासी बोर्ड द्वारा कोई प्रभावी कदम नहीं उठाये गये हैं। एएसई ने, भाप्रविबो के तारीख 23.10.2002 के पत्र के उत्तर में भेजे गये अपने तारीख 30.12.2002 के पत्र द्वारा, यह कथन किया है कि जब स्टॉक एक्सचेंज का कार्यपालक निदेशक अपनी शिकायत को एफआईआर में संपरिवर्तित करने के लिए एलिस ब्रिज पुलिस थाने के थाना-प्रभारी से मिले, तो एसएचओ ने उन्हें सुसंगत धाराओं के संबंध में एक विस्तृत नोट प्रस्तुत करने को कहा जिनके अधीन एफआईआर दर्ज की जानी चाहिये और यह भी स्पष्ट करने को कहा कि क्या ऐसा अपराध विधि के अधीन संज्ञेय अपराध है। कार्यपालक निदेशक ने भी यह कथन किया कि वह भाप्रविबो को पुलिस के पास दर्ज एफआईआर की

प्रति 01.01.2003 तक अग्रेषित करने में समर्थ होगा। हालांकि, एफआईआर की प्रति अभी तक भाप्रविबो को प्राप्त नहीं हुई है।

कार्यपालक निदेशक ने अपने पत्र में यह भी कथन किया है कि 19.09.2002 को स्टॉक एक्सचेंज के बरामदे में खड़े पाये गये व्यक्तियों के खिलाफ कोई अनुशासनिक कार्यवाहियाँ शुरू करना कठिन होगा, क्योंकि शनाख्त और सबूत की कमी थी। इस संबंध में, मैं यह नोट करता हूँ कि कार्यपालक निदेशक ने अपने तारीख 19.09.2002 के पत्र में यह कथन किया था कि अन्य व्यक्तियों में से कुछ दलाल भी बरामदे में खड़े हुए पाये गये थे जहाँ जोता फाटक संविदाओं के व्यापार हेतु अनधिकृत बाजार चल रहा था।

उपर्युक्त से इस बात का सबूत मिलता है कि स्टॉक एक्सचेंज प्राधिकारी तथा शासी बोर्ड गैर-कानूनी संव्यवहारों में अंतर्वलित व्यक्तियों के खिलाफ कार्रवाई को सुनिश्चित करने हेतु पुलिस के पास दर्ज शिकायत के सिलसिले में प्रभावी रूप से अनुवर्ती-कार्रवाई करने में असफल रहे और यह सुनिश्चित करने में भी असफल रहे कि स्टॉक एक्सचेंज के उन सदस्यों के खिलाफ समुचित अनुशासनिक कार्रवाई कर ली गई है जो उक्त गैर-कानूनी संव्यवहारों में अंतर्वलित पाये गये थे।

15.0 उपर्युक्त तथ्यों के मद्देनजर, मुझे विश्वास है कि एएसई का शासी बोर्ड समुचित शासन और प्रसंविअ के उपबंधों तथा भाप्रविबो के निदेशों के कार्यान्वयन को सुनिश्चित करने में विफल रहा है।

16.0 एएसई के शासी बोर्ड को सूचित कर दिया गया है कि उनके परिसर में तथा इसके आसपास अनधिकृत व्यापार चल रहा है। एक कदम जो एएसई ने उठाया है वह है पुलिस को सूचना देना। सुनवाई के दौरान भी, एएसई की ओर से यह उल्लेख किया गया कि इससे ज्यादा वे अनधिकृत बदला को रोकने के लिए क्या कर सकते थे? यदि भाप्रविबो को सुझाव देने हैं और एक्सचेंज के ध्यान में यह लाना है कि उनके परिसर में या के आसपास अनधिकृत बदला चल रहा है, तो निश्चित तौर पर, स्टॉक एक्सचेंज जो प्रसंविअ तथा एक्सचेंज की उप-विधियों के अधीन संविदाओं को विनियमित तथा नियंत्रित करने हेतु एक विनियामक निकाय है के लिए यह सुनिश्चित करना संभव है कि ऐसे क्रियाकलाप उनके परिसर के आसपास न हों। स्टॉक एक्सचेंजों को सुरक्षा-गार्ड लगाने, समर्पित अधिकारियों द्वारा निरंतर अनुश्रवण करने, दलालों को चेतावनी देने, कार्रवाई करने की आवश्यकता है, समग्र रूप से यह सुनिश्चित करने की कि कोई अनधिकृत बदला न हो। शासी बोर्ड जो यह सुनिश्चित करने के लिए अर्थोपाय भी नहीं कर सकता कि गैर-कानूनी क्रियाकलाप नहीं हो रहे हैं बने रहने के

योग्य नहीं है। अनधिकृत बदला केवल स्टॉक दलालों के अहित में ही नहीं है, बल्कि विनिधानकर्ताओं (निवेशकों) तथा प्रतिभूति बाजार के अहित में भी है। इसलिये, मेरी राय यह है कि यह अनिवार्य है कि बाजार की सुरक्षा तथा सत्यनिष्ठा सुनिश्चित करने और स्टॉक एक्सचेंज की कार्यप्रणाली में विनिधानकर्ताओं के विश्वास को कायम रखने के लिए तुरंत उपाय किये जायें।

17.0 भाप्रविबो यह सुनिश्चित करने के लिए आदेशाधीन है कि एक्सचेंज में प्रणालियाँ और प्रक्रियाएँ ऐसी हों कि संव्यवहार विधिपूर्ण प्रकार से तथा विनिधानकर्ताओं के हित को प्रभावित किये बिना किये जायें। यह सुनिश्चित करने के लिए कि एएसई में ऐसे व्यवस्थित सुधार हों, यह आवश्यक है कि उन व्यक्तियों को एक्सचेंज के शासन से अपवर्जित किये जाने की आवश्यकता है जो प्रभावी कार्रवाई करने में असफल रहे हैं और स्वतंत्र तथा निष्पक्ष व्यक्ति नियुक्त हो।

18.0 उपर्युक्त को ध्यान में रखते हुए और भारत सरकार की तारीख 30 जुलाई 1993 की अधिसूचना सं. एस.ओ.573 के साथ पठित प्रतिभूति संविदा (विनियमन) अधिनियम, 1956 की धारा 11 तथा भारतीय प्रतिभूति और विनियम बोर्ड अधिनियम, 1992 की धारा 4(3) के अधीन मुझे प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, मैं अहमदाबाद स्टॉक एक्सचेंज के शासी बोर्ड को एतद्वारा मार्च 25, 2003 से एक वर्ष की कालावधि के लिए अतिष्ठित करता हूँ और शासी बोर्ड की समस्त शक्तियों तथा कर्तव्यों का प्रयोग करने तथा पालन करने के लिए श्री पी.के. घोष को प्रशासक के तौर पर नियुक्त करता हूँ। श्री पी.के. घोष ऐसे व्यक्तियों की सहायता ले सकेंगे जो वे प्रशासक के तौर पर अपने कर्तव्यों के निर्वहन में आवश्यक समझें।

[फा. सं. भाप्रविबो/विधि/2096/03]

ज्ञानेन्द्र नाथ बाजपेयी, अध्यक्ष

SECURITIES AND EXCHANGE BOARD OF INDIA**NOTIFICATION**

Mumbai, the 25th March, 2003

**ORDER UNDER SECTION 11 OF THE SECURITIES CONTRACTS
(REGULATION) ACT, 1956 SUPERSEDING THE GOVERNING BOARD OF
AHMEDABAD STOCK EXCHANGE**

^{2 111}
S.O. 314(E).—In the course of Annual Inspection of the Ahmedabad

Stock Exchange (hereinafter referred to as "ASE") conducted by the Securities and Exchange Board of India (hereinafter referred to as "SEBI") on August 05, 2002, it was, inter alia, observed that members of ASE were carrying on unofficial trading in securities in the Stock Exchange premises. Thereupon, vide letter dated August 26, 2002, SEBI advised ASE to take immediate steps to stop the unofficial trading in securities and to investigate and take necessary steps against members of the exchange who were involved in the said trading. SEBI also advised ASE to submit a report on the action taken by them. ASE vide letter dated August 30, 2002, informed that they are initiating enquiry into the matter and shall submit a report in the matter. ASE also informed that they have issued a circular warning members to refrain from unofficial trading. Subsequently, on September 17, 2002, ASE submitted a report on the unofficial trading to SEBI. The said report of ASE was annexed as Annexure A to the Show Cause Notice dated 25.9.2002.

2.0 The said report of ASE dated September 17, 2002, stated that:

- a) There is no unofficial market operational within the official premises of the Stock Exchange, Ahmedabad and that there is no assembly of members/non-members either during the trading hours or after closure of the trading session for any such activity.
- b) In one open space in Kamadhenu Complex, Panjarapole, where the Stock Exchange is located, there is a regular assembly of persons after close of trading session.
- c) An official of the exchange deputed to observe the activities during the unofficial trading session reported that –
 - members of their exchange were not participating in the unofficial market
 - a number of other persons who are not connected with the exchange do participate in the said market
 - the duration of the session is around one hour everyday and the process of settlement among participants is payment and receipt in cash directly.
- d) The reasons for participation by persons in such unofficial market was stated to be –
 - They have no access to the equity and derivatives market.
 - They want to avoid the cost of transaction, margining and risk management.
 - They have confidence in each other and hence have no problem in settlement.
 - They are not registered with SEBI as stock brokers or sub-brokers and so are able to avoid all regulatory compliance.

- Option contracts are not available in ASE whereas these persons have been operating a unique type of options contract called "phatak".

- e) The unofficial market is not carried on for purchase or sale of securities and is therefore not reflected in the equity trading system of the exchange at any time. The options contracts are not settled by way of delivery, rather, they are always settled by way of price difference in cash. These contracts are not identical or similar to regular purchase and sale of shares and therefore there is no threat to market integrity.
- f) The trading methodology of the unofficial market is termed in the local language as "Phatak" which means derivatives contracts and "Phatak" consists of three different types of transactions namely - Jota, Bhav Bhav and Teji Mandi.

3.0 Subsequently, on September 19, 2002, SEBI conducted a surprise inspection of ASE. The inspecting officer of SEBI observed that an unofficial market in an open outcry fashion was being held within the stock exchange premises and members of the exchange were also participating in the same. When confronted by the inspecting officer with the observation that unofficial trading was going on in the premises of the exchange by the members of the exchange, the Executive Director of ASE issued a letter to SEBI on the same day confirming that an unofficial market for Jota Phatak was going on as observed by him also on that day.

3.1 In his report dated September 20, 2002 (annexed as Annexure B to the Show Cause Notice dated 25.9.2002) the inspecting officer has mentioned that:

- a) ASE has not taken any steps to stop the unofficial market despite instructions from SEBI vide letter dated August 26, 2002.

b) ASE has submitted a false report to SEBI vide their letter dated September 17, 2002 that -

- The unofficial market was not conducted within the official premises of the Stock Exchange
- Members of ASE are not participating in such unofficial market

4.0 Thereafter, vide letter dated September 20, 2002, ASE informed SEBI that they have lodged a complaint with the Ellis Bridge Police Station with a request to do the needful to prohibit the illegal transactions. However, they failed to confirm that unofficial trades in the premises of the stock exchange were prohibited.

5.0 Besides the failure to prohibit unofficial trading, in a matter where SEBI had initiated Enquiry proceedings against 20 brokers for indulging in unauthorized carry forward transactions, ASE referred the matter to the Disciplinary Action Committee and levied a penalty of Rs.1000.00 each on them.

6.0 In view of the report of the inspecting officer and the failure of ASE to curb the unofficial trading in the premises of the stock exchange, a show cause notice was issued on September 25, 2002 under section 11 of the Securities Contracts (Regulation) Act, 1956 (hereinafter referred to as "SCRA") to the Governing Board of ASE advising them to show cause why appropriate action including supersession should not be taken against them. Alongwith the said show cause notice the report of the ASE, the report of the inspecting officer submitted on 20.09.2002, SEBI warning letters dated April 24, 2002 and July 05, 2002 (annexed as Annexure C and Annexure D to Show Cause Notice 25.9.2002) were also sent to the Governing Board of ASE.

7.0 The Governing Board of ASE submitted their reply to the said show cause notice vide their letter dated October 9, 2002. In the reply, they stated inter alia that:

- i) In order to prevent any unofficial transactions within the vicinity of the exchange, ASE has filed a police complaint and requested police authorities to take appropriate action under law to prohibit such illegal activities relating to unofficial transactions
- ii) The exchange has taken due precaution to prevent any unofficial transactions within the premises of the exchange.
- iii) In order to have an impartial check on the behavior of members as well as their financial transactions, the governing board in its meeting held on 26.7.2002 decided to conduct inspection of accounts of the members by M/s C R Shreedalal & Co who are independent auditors.
- iv) They do not have any concrete evidence of the participation of brokers of their exchange in the unofficial market within the official premises of the stock exchange.
- v) The decision to impose penalty on the 20 brokers against whom Enquiry has been initiated by SEBI was taken by the Disciplinary Action Committee. However, the Governing Board will be more vigilant in future.
- vi) ASE has not obtained permission to trade in derivatives and therefore have not launched trading in derivatives. They do not offer facility to trade in derivatives either to members or non-members. Further, ASE ensures that none of the floor transactions entered into outside the premises can be entered in the trading system of ASE because of the price-time priority maintained by the system.

7.1 In view of the above, ASE have submitted that they have taken sufficient precautions to stop the unofficial trading in securities by virtue of which

such trading has practically stopped, that trading in derivatives is not carried out in ASE and therefore, there is no violation of the SCRA, that no undesirable transactions in securities are being carried out to the knowledge of the Governing Board of ASE and hence they have submitted that they have never allowed any such transaction.

8.0 The Governing Board of ASE also sought a personal hearing before me in this regard. Personal hearing was granted to members of the Governing Board on November 20, 2002. They submitted in their reply dated 9.10.2002 that they have filed a police complaint and are taking all necessary action to prohibit unofficial trading in securities. In view of the submission made by the Governing Board in their reply that unofficial trading had stopped, an inspection team was deputed by SEBI on November 15, 2002, to confirm the veracity of the said submission. The inspecting team during the inspection on 15.11.2002 found that an open outcry system of trading was being carried out by members at the basement and near HDFC Bank in the premises of ASE. The members of the said inspecting team were present during the personal hearing as on 20.11.02 before me in case the members of the Governing Board desired to put any questions to the said inspecting team. The inspecting team stated before me and members of the Governing Board that during the said inspection on 15.11.2002, they had observed that unofficial trading was taking place in the premises of ASE even during trading hours. It was submitted on behalf of the Governing Board that the alleged transactions were outside the stock exchange and it was not possible for them to monitor the same.

9.0 I find that unofficial trading in the premises of ASE was observed during inspections carried out by SEBI on 5.8.02 and 19.9.02 the same was also corroborated by the Executive Director of the stock exchange vide his letter dated 19.9.02. The same was brought to the notice of officials of

ASE and they were advised to take steps to prohibit the same. The Officials of ASE promised to take steps to curb the unofficial trading and in their reply dated 9.10.2002, the Governing Board stated that the exchange has taken due precaution to prevent any unofficial transactions within the premises of the exchange. They have also stated that they do not have any concrete evidence of participation of their members in the unofficial market and that the exchange has put in place a strong mechanism to prevent and curb any such practices and that the said unofficial trade has practically stopped. However, the inspection team deputed by SEBI during their visit to the Exchange premises on 15.11.2002 observed that unofficial trading in open outcry system was taking place in the premises and that members of the exchange were involved in the same.

10.0 In this regard, it would be appropriate to refer to relevant provisions of the law. Section 16 of the SCRA provides that :

“16(1) if the Central Government is of the opinion that it is necessary to prevent undesirable speculation in specified securities in any state or area, it may by notification in the official gazette declare that no person in the state or area specified in the notification shall, save with the permission of the Central Government (or SEBI/RBI), enter into any contract for the sale or purchase of any security specified in the notification except to the extent and in the manner, if any, specified therein.

(2) All contracts in contravention of the provisions of sub-section (1) entered into after the date of notification issued there under shall be illegal.

In accordance with the above, a notification no SO 184(E) was published in the Gazette of India on March 01, 2000 stating that

“ in exercise of the powers conferred by sub-section (1) of section 16 of the Securities Contracts (Regulation) Act, 1956 read with Government of India Notification no 573(E) dated 30th July, 1992 and notification no 183 (E) dated 1st March , 2000 issued under section 29A of the said Act, the Securities and Exchange Board of India (hereinafter referred to as “the Board”) being of the opinion that it is necessary to prevent undesirable speculation in securities in the whole of India, hereby declare that no person in the territory to which the said Act extends , shall, save with the permission of the Board, enter into any contract for sale or purchase of securities other than such spot delivery contract or contract for cash or hand delivery or special delivery or contract in derivatives as is permissible under the said Act or the Securities and Exchange Board of India, Act , 1992 and the Rules and Regulations made under such Acts and Rules , Regulations and Bye-laws of a recognized Stock Exchange :

Provided that any contract for sale or purchase of government securities, gold related securities , money market securities and ready forward contracts in debt securities entered into on the recognized stock exchange shall be entered into in accordance with –

- a) the rules or regulations or the bye-laws made under the Securities Contract (Regulations) Act , 1956 (42 of 1956) or the Securities and Exchange Board of India Act, 1992 (15 of 1992) or the directions issued by the Securities and Exchange Board of India under the said Acts ;
- b) the rules made or guidelines or directions issued under the Reserve Bank of India Act , 1934 (2 of 1934) or the Banking Regulation Act, 1949 (10 of 1949) or the Foreign Exchange Regulation Act , 1973 (46 of 1973) by the Reserve Bank of India;

- c) The provisions contained in the notifications issued by the Reserve Bank of India under the Securities Contract (Regulations) Act , 1956 (42 of 1956) “

I also find that ASE in its letter dated September 17, 2002 has admitted to an unofficial market in derivatives also being carried on in the premises of the Stock Exchange. In their complaint to the Ellis bridge Police Station dated 20.9.2002, the stock exchange has mentioned that some unscrupulous persons are carrying out illegal transactions in securities within the premises of the stock exchange and that the same is a cognizable offence under the SCRA. In this regard, Section 18 A of the SCRA states that notwithstanding anything contained in any other law for the time being in force, contracts in derivatives shall be legal and valid if such contracts are: (a) traded on a recognized stock exchange; (b) settled on a clearing house of the recognized stock exchange in accordance with the rules and bye-laws of such stock exchange.

I find that the unofficial market was carried on in the premises where ASE is located in contravention of the provisions of Sections 16 and 18A of the SCRA. I find that although in their reply dated 9.10.2002, ASE has submitted that they have taken all necessary steps to prevent any illegal trading, during the inspection by SEBI officials on 15.11.2002 it was observed that the illegal trading was still being carried on. By allowing the unofficial trade to continue despite directives from SEBI to prohibit the same, ASE has failed to ensure compliance with the said provisions of SC(R)A. The submission that it is not possible for ASE to monitor such transactions as it is outside the stock exchange is not tenable. The finding in preceding paras, particularly in para 9.0 shows that such

unofficial transaction was taking place in within the premises of the exchange and some of the members were also involved in the same. Even if it is presumed as contended by noticees that such transactions were outside the stock exchange, in view of the provisions of Section 16, 18A, 19 of SC(R) Act and notification issued under Section 16, it is the duty of the Exchange to prevent such transactions.

- 11.0 I find that the exchange has not complied with the directives / circulars etc. of SEBI within the stipulated time-frame and has shown disregard to deadlines set by SEBI in complying with its directives. In this regard, I also note that SEBI has issued two warning letters dated April 24, 2002 & July 05, 2002 in the current financial year for non implementation of system based gross margin in cash market and disruption in trading.
- 12.0 I find that ASE failed to comply with the order issued by SEBI under section 8 of SC(R) Act dated January 10, 2002 wherein the exchange was directed to amend their Rules, Articles etc. within a period of two months to give effect to the segregation of ownership and trading membership from management of stock exchange. Thereupon SEBI was constrained to amend the rules of ASE vide notification dated April 16, 2002 to give effect to the same.
- 13.0 It may be observed that the Joint Parliamentary Committee in its report which was laid before Parliament on 19.12.2002, has also observed that illegal financing in various forms appear to be resurfacing in exchanges like Ahmedabad. Synchronized deals and gathering of brokers at fixed time on a particular day in a week in trading hall of the exchange / corridors of the exchange to fix badla charges is common knowledge. There is need for SEBI to take immediate action.

14.0 I find that no effective steps have been taken by the Governing Board in respect of filing an FIR before the Police Authorities and in taking disciplinary action against members of the exchange found to be involved in the unofficial transactions. ASE, vide their letter dated 30.12.2002, sent in reply to SEBI's letter dated 23.10.2002, have stated that when the ED of the Stock Exchange met the Station in charge (SHO) of Ellisbridge Police Station to convert their complaint into an FIR, the SHO advised them to submit a detailed note on the relevant sections under which the FIR should be registered and also to explain whether such offence is cognizable under Law. The ED also stated that he would be able to forward the copy of FIR registered with the Police to SEBI latest by 01.01.2003. However, the copy of the FIR is yet to be received by SEBI.

The ED in his letter has also stated that it would be difficult to initiate any disciplinary proceedings against persons found to be standing in the corridor of the stock exchange on 19.09.2002, since there was a lack of identification and evidence. In this regard, I note that the ED in his letter dated 19.09.2002 had stated that among other persons a few brokers were also found to be standing in the corridor where the unofficial market for trading jota phatak contracts was going on.

It is evident from the above that the stock exchange authorities and the Governing Board have failed to effectively follow up the complaint with the police to ensure action against persons involved in the illegal transactions and also failed to ensure that appropriate disciplinary action is taken against members of the stock exchange who were found to be involved in the said illegal transactions.

15.0 In view of the above facts, I am convinced that the Governing Board of ASE has failed to ensure proper governance and implementation of the provisions of the SCRA and SEBI directives.

- 16.0 The Governing Board of ASE has been informed that unofficial trading is being carried on in and near to their premises. One step which the ASE has taken is to inform the police. During the hearing also, on behalf of ASE it was mentioned that beyond this what could they do to curb the unofficial badla? If SEBI has to make suggestions and bring it to the notice of the exchange that unofficial badla is being carried on in or near to their premises, then surely, it is possible for a stock exchange which is a regulatory body to regulate and control the contracts under SC(R) Act and bye laws of the Exchange to ensure that such activities are not carried on in their vicinity. The Stock Exchanges need to put security guards in place, have continuous monitoring by dedicated officers, warn brokers, take action, all to ensure that there is no unofficial badla. A Governing body which cannot even think of ways and means to ensure that illegal activities are not being carried on does not deserve to continue. Unofficial badla works not only to the detriment of stock brokers, but also to the detriment of investors and the securities market. Therefore, I am of the opinion that it is essential that immediate measures are taken to ensure the safety and integrity of the market and to restore the confidence of investors in the functioning of the Stock Exchange.
- 17.0 SEBI is mandated to ensure that the systems and the procedures on an exchange are such that the transactions are carried on in a lawful manner and without affecting the interest of investors. In order to ensure that such systemic improvements take place on ASE it is necessary that the persons who have failed to take effective action need to be excluded from governance of the exchange and an independent and impartial person is appointed.
- 18.0 In view of the above and in exercise of the powers conferred on me under Section 11 of the Securities Contracts (Regulation) Act, 1956 read with

Government of India Notification No. S.O.573 dated July 30, 1993 and Section 4 (3) of the Securities and Exchange Board of India Act, 1992, I hereby supersede the Governing Board of Ahmedabad Stock Exchange with effect from March 25, 2003 for a period of one year and appoint Shri P. K. Ghosh as an administrator to exercise and perform all the powers and duties of the Governing Board. Shri P K Ghosh may take the assistance of such persons as he deems necessary in discharge of his duties as administrator.

[F. No. SEBI/LE/2096/03]

G. N. BAJPAI, Chairman